P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्लोबल वार्मिंग और बढता पर्यावरण प्रदूषण

महेश चन्द मीना
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, भारत

सारांश

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से निरन्तर बढते तापमान से हमारी दिनचर्या के प्रभावित होने से आमजन अत्यधिक परेशान है। वैज्ञानिकों का मानना है कि इस प्रकार से ग्लोबल वार्मिंग होती रही तो गंगा नदी सूख जायेगी, जिसके कारण हजारों गाँव व शहर बर्बाद हो जायेंगे व हिमालय पर्वत के ग्लेशियर पिघल जायेंगे। वायुमण्डल में उपस्थित कार्बनडाईऑक्साइड गैस पृथ्वी के तापमान को बढाने वाली प्रमख गैस है, इसके अलावा मिथेन, क्लोरोफ्लोरों कार्बन, नाइट्रस ऑक्साइड, हेलोन आदि गैसें भी भूण्डलीय तापमान की वृद्धि में सहायक होती है, ये गैसे दीर्घ तरंगी पार्थिव विकीरण को वायु मण्डल से बाहर जाने से रोक लेती है। परिणामस्वरूप तापमान बढने से ताप सन्तुलन बिगड़ जाता है, यही ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक ऊष्णता भी कहा जाता है, जो कि वर्तमान समय की विश्वव्यापी पर्यावरणीय समस्या है।

मुख्य शब्द : ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस गैसें, समय बम, भूमण्डलीय तापमान, ओजोन परत।

प्रस्तावना

परिवर्तनशील जगत में मनुष्य के साथ–साथ प्रकृति में बदलाव आया हैं, परिवर्तित होते पर्यावरण और उसके परिणामस्वरूप होने वाली ग्लोबल वार्मिंग आज पृथ्वी के अस्तित्व के लिए एक चुनौती बन चुकी है। अमेरिका के नासा संस्थान से जुड़े प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिम हेनसन ने दुनिया को चेतावनी दी है कि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के विकेंन्द्रीकरण एवं विनाशकारी असर को कम करने के लिए दुनिया के पास बहुत कम समय रह गया है।[1] बढते हुए तापमान के कारण मानव जीवन उथल–पुथल हो गया है, क्योंकि मानव ने अपने विलासितापूर्ण जीवन के लिए पृथ्वी का अत्यधिक दोहन किया है। जिससे अत्यधिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैसें है, ये गैसे पृथ्वी को निरन्तर गर्म रखती है। वायुमण्डल में इनका प्रभाव अत्यधिक बढ़ जाता है, कई दशकों तक ये वायुमण्डल में विद्यमान रहती है।[2] ओजोन परत में छेद होना भी ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। मानवीय क्रियाकलापा के द्वारा उत्सर्जित हानिकारक रसायन के कारण ओजोन के विनाश से ओजोन परत पतली होती जा रही है, जिससे ओजोन नामक विशिष्ट गैस की निरन्तर कमी हो रही है। इसके अतिरिक्त उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों में वनों की अन्धाधुन्ध कटाई से भी विकट पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण आवास एवं कृषि योग्य भूमि में विस्तार के कारण उष्ण कटिबन्धीय वनों का तीव्र गति से ह्रास हुआ है।

निर्वनीकरण द्वारा वानस्पतिक आवरण में आ रही कमी के कारण वनस्पति द्वारा कार्बनडाइऑक्साइड गैस का पर्याप्त अवशोषण नहों हो पा रहा है, जिसके कारण पृथ्वी की सतह का तापमान बढता जा रहा है।

वर्तमान समय में प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ हम कर रहे है उससे हरे–भरे खेत–खलिहान तेजी से कंकरीट के जंगलों में परिवर्तित होते जा रहे है, हम सभी मिलकर प्रकृति के उपादानों का जीभरकर दोहन कर रहे हैं, जिससे संरक्षण के स्थान पर उनका क्षरण हो रहा है। प्रकृति की चित्कार को अनसुना कर उसकी वेदना पर अट्टाहास करना हम सभी को बहुत महँगा पड़ सकता है। आज सभी इस सत्य से आँखे मदे हुए है कि प्रकृति की यह मौन वेदना जिस दिन कहर बनकर बरसेगी उस दिन मानव का अस्तित्व गुजरे समय की वार्ताबन जायेगी। मानव सभ्यता आज जिन भौतिक सुखों को अपनी उपलब्धियाँ जानकर प्रसन्न हो रही है। वहीं उपभोक्तावादी संस्कृति कल उसके विनाश का कारण बनेगी। आज का मानव अन्तहीन महत्वाकांक्षाओं के भँवर में फँसता चला जा रहा है। प्राचीन युग में मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ मात्र रोटी, कपड़ा और मकान थी किन्तु आज अति उपभोक्तावादी जीवन शैली ने उस प्राचीन व्यवस्था

को नकार कर एक ऐसी परम्परा को स्थापित कर दिया है जिससे वह सुविधा सम्पन्नता की चकाचौंध में अन्धा हो गया है, उसके सुख संसाधनों में कोई विराम बिन्दु नहीं है। सुखों की मृगतृष्णा में वह रेगिस्तान में भटकते प्यासे मृग की तरह अन्धाधुन्ध दौड़ता चला जा रहा है। अत्यधिक सुख–सुविधाओं की चाहत के परिणामस्वरूप बेतहाशा बढती नाभिकीय प्रतिस्पर्धाऐं, वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत, औद्योगिक क्रान्ति, बिजली, पानी और ईंधन के संसाधनों की अत्यधिक खपत और प्रगति के प्रतीक बने रेफ्रिजरेटर, मोबाइल, एयरकंडिशनर, माइक्रो–इलैक्ट्रिक उपकरण एवं हवाई यात्राऐं मानव–जीवन का अपरिहार्य अंग बन चुकी है। हम सभी नहीं जानते है किइस प्रगति के गर्भ में ही विनाश के बीज दिये है। इस स्थिति में 2 से 3 डिग्री सेल्सियस का अतिरिक्त तापमान बढ़ना भी आज मानव के लिए पृथ्वी के अन्त का कारण बन सकता है। ग्रीन हाउस गैसें भी आज मानव के लिए पृथ्वी के अन्त का कारण बन सकती है। ग्रीन हाउस गैसों के बढते उत्सर्जन क फलस्वरूप बढते तापमान से ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना शुरू हो गया है। आर्कटिक, अण्टार्कटिक, एण्डीज, आल्पस और हिमालय आदि का हिम भी प्राकृतिक ढंग से पिघलना जारी है जिससे समुद्र के जल–स्तर में अप्रत्याषित बढोतरी हो सकती है। जो प्रलयकारी बाढ़ और सुनामी जैसो आपदाओं से पृथ्वी को निगलने के लिए तैयार बैठी है। आज यदि हम समय रहते सचेत न हुए तो प्रकृति का मौन कहर बनकर कभी ऐसा टूटेगा कि समूची मानव–सभ्यता की यह इमारत अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की तरह पलभर में भरभराकर कुछ ही क्षणों मे ध्वस्त हो सकती हैं, अतः जलवायु–परिवर्तन के भीषण ताण्डव नर्तन को विराम देना होगा तभी पर्यावरण सुरक्षा का स्वप्न साकार हो सकता है।

''पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी भारतीय संस्कृति की देन'' नामक अपने निबन्ध में लिखते है– कि न जाने किस अनादिकाल के एक अज्ञात मुहूर्त में यह पृथ्वी नामक ग्रहपिण्ड सूर्य मण्डल से टूटकर उसके चारों ओर चक्कर काटने लगा था। उस सघस्त्रुटित धरित्री–पिण्ड में ज्वलन्त गैस भरे हुए थे। कोई नहीं जानता कि इन असंख्य अग्नि गर्म कणों में किस जीवतत्व का अंकुर विद्यमान था, उसके बाद लाखों वर्षो तक पृथ्वी ठण्डी होती रही, उसके भीतर–बाहर प्रलयकाण्ड मचा रहा था। जीवतत्व स्थित अविक्षुब्ध भाव से उचित अवसर की प्रतिक्षा में बैठा रहा और अवसर आने पर उसने समस्त जड़शक्ति के विरूद्ध विद्रोह करके सिर उठाया–नगण्य तृणांकुर के रूप में। तब तक महाकर्ष (ग्रेविटेशन पाबर) के विराट वेट को रोकने में कोई समर्थ नही हो सकता था। जीव तत्व प्रथम बार अपनी उर्ध्वगामिनी वृत्ति की अदना ताकत के बल पर इस महाकर्ष को अस्वीकार कर सका। मनुष्य उसी की अन्तिम परिणति है। कार्य कारण बनता है और नये कार्य को जन्म देता है। इसी समय मनुष्य आया उसने साधारण नियम को अस्वीकार किया। जो जैसा ह, उसे वैसा ही मान लेने की विवशता को उसने नहीं माना अपितु जैसा होना चाहिए वही बड़ी बात है, यही से सृष्टि का दूसरा अध्याय आरम्भ हुआ था।[3] प्रगति और विकास के नाम पर विज्ञान और प्रौद्यागिकी के बल पर पिछले तीस–चालीस सालों मे जो कुछ हुआ है उससे उत्सर्जित अवशेषों ने सम्पूर्ण पर्यावरण और परिवंशिकी के लिए गहन संकट खड़ा किया है। रेडियों एक्टिविटी के बारे में अमेरिका की ''नवेल रेडियोलॉजिकल लेबोरेटरी'' ने कहा है–चूंकि हमें यह नहीं पता कि मानव शरीर इन दुष्प्रभावों से अपने–आपको पूरी तरह मुक्त कर सकता है या नहीं इसलिये हमारे सामने यही रास्ता बचता है कि हम अपने मन से एक ऐसा निर्णय ले कि मनुष्य 'रेडियों एक्टोविटो की अमुक यात्रा बर्दाश्त कर सकता है।[4] अमेरिका के न्यूयार्क शहर का कचरा केरल भेजे जाने की घटना से यह स्पष्ट हो गया है कि विकसित देश व्यापार की आड़ में विकासशील देशों को अपनी सुविधानुसार प्रयोग करना चाहते है। यह कचरा कागज बनाने के नाम पर कोच्चि की निजि कम्पनी कोचिनकैड़लस ने मंगवाया था। आज भूमण्डलीकरण के दौर में दुनिया भर के देशों के बीच व्यापारिक सम्बन्धों में तेजी आयी है। विकसित देश कचरे का निर्यात करके कभी नष्ट न होने वाले जहरीले पदार्थो के द्वारा गरीब देशों के पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है।[5] आधुनिक प्रौद्योगिकी में प्रगति तथा मनुष्य के अथक क्रियाकलापों में वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों के विदोहन में दिन–प्रतिदिन तेजी आयी है परिणामस्वरूप परिवर्तित पर्यावरणीय दशाओं का जीवमण्डल के जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण में इस तरह के मानव–जनित परिवर्तनों को पर्यावरण अवनयन या पर्यावरण अवक्रमण कहते है। पर्यावरण अवनयन का अर्थ यह है कि पर्यावरण के भौतिक संघटको में जैविक प्रक्रमों खासकर मनुष्य की क्रियाओं द्वारा इस सीमा तक ह्रास एवं अवक्रमण हो जाना कि उसे पर्यावरण की स्वतः नियामक क्रियाविधि (होग्योस्टैटिक क्रिया विधि) द्वारा भी सही नहीं किया जा सकता।''[6] औद्योगिक विस्तार, निरन्तर बढते नगरीय विस्तार, पर्यटन उद्योग में वृद्धि आदि के कारण वन्य प्रदेश पर भार बढ़ रहा है। वर्तमान समय में वन्य प्रदेशों में तेजी से हास हुआ है क्योकि मनुष्य पृथ्वी के प्रत्येक कोने तक पहुँच चुका है। वर्तमान समय में भौतिकवादी लालची मनुष्य ने पर्यावरण के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने विदोहनात्मक कार्यो द्वारा बर्बाद कर दिया है। और पर्यावरण में स्थानीय, प्रादेशिक एवं विश्व स्तरों पर अवनयन बढता ही जा रहा है। मनुष्य ने आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक में विकास, बढ़ती प्रौद्योगिकी, रासायनिक खादों के उत्पादन तथा उपभोग में वृद्धि, सिंचाई के साधनों एवं सुविधाओं में वृद्धि तथा विस्तार, अधिक उत्पादन वाले बीजों के विकास आदि के माध्यम से कृषि में पर्याप्त विस्तार एवं विकास किया है तथा निरन्तर बढ़ती मानव जनसंख्या के कारण बढती खाद्यान्नों की मांग की पूर्ति तो की है किन्तु साथ ही साथ घातक पर्यावरणीय समस्याओं को भी जन्म दिया है। आधुनिक 'आर्थिक एवं प्रौद्यागिकी मानव' उस चौराहे पर खड़ा है जिसके चारों ओर खतरा ही खतरा है। यदि जनसंख्या में

विस्तार जारी रहेगा तो कृषि में विस्तार एवं वृद्धि करनी ही होगी ताकि भूखे पेटों को भरने के लिए कृषि उत्पादन में वृद्धि की जा सके किन्तु ऐसा करते समय हमें विनाश के लिए अपने ही द्वारा निर्मित ''समय बम'' से निपटने के लिए भी तैयार रहना होगा। साथ ही कारखानों से चाहे या अनचाहे रूप में जहरीली गैसों के रिसाव एवं विमोचन के कारण प्राणघातक पर्यावरणीय प्रकोप उत्पन्न हो जाते हैं जो सभी प्रकार के जीवों को विनष्ट कर देते है। भोपाल गैस त्रासदी (3–4 दिसम्बर, 1984) तथा यूक्रेन में चेरनोबिल नाभिकीय विनाश (दिसम्बर, 1986) औद्योगिकरण मनुष्य की असावधानी एवं उसकी आधुनिकतम प्रौद्योगिकीय असफलता से उत्पन्न होने वाले विनाशकारी प्रभाव के कतिपय उदाहरण है।[7]

पर्यावरण प्रदूषण–

ग्लोबल वार्मिंग वर्तमान शताब्दी की सबसे विकट पर्यावरणीय समस्या है। प्रकृति में अनेकानेक घटनाएँ होती रहती है। जिससे पर्यावरण में असन्तुलन पैदा होता है, इस असन्तुलन का जनक मानव ही है। यही असन्तुलन मानव व प्राणी जगत के जीवन पर विपरीत प्रभाव डाल रहा है।

वायु प्रदूषण

आज से 5000 वर्ष पूर्व जब सर्वप्रथम मनुष्य ने आग जलाना सीखा था, तो उसी दिन विकास के साथ–साथ प्रदूषण का बीजारोपण हो चुका था। वायु प्रदूषण एक ऐसी स्थिति है, जब भौतिक रासायनिक और जैविक परिवर्तन के कारण हवा, जल और धरातल अपनी गुणवत्ता खो देते है तब जीवधारियों के लिए पर्यावरण लाभकारी होने की अपेक्षा हानिकारक होने लगता है। वायु प्रदूषण वर्तमान समय की औद्योगिक एवं तकनीकी सभ्यता की एक ऐसी देन है जो कि न केवल पारिस्थितिक तन्त्र को असन्तुलित बनाकर हानिकारक प्रभाव उत्पन्न कर रहा है अपितु मानव एवं अन्य जीवों, वनस्पतियों आदि के संकट का कारण बनता जा रहा है। प्रदूषित हवा से बचने के लिए व्यक्ति कितने भी प्रयास कर ले, किन्तु ये प्रदूषित हवा सेंध लगाकर नुकसान पहुँचाने चली आती है। ऐसे समय में जुबैर रिजवी की ये पंक्तियाँ याद आती है–

ये किसने ताजा हवाओं के पर कतर डाले।
बड़े यकीन से खोली थी, खिडकियाँ हमने।।

जीव–जगत के प्राण–व्यापार के लिए शुद्ध वायु का होना परमावश्यक है। सम्पूर्ण विश्व में सतत् प्रवाहशील होने से इसका नाम वायु है। वैदिक वाड्मय में वात तथा वायु नाम से कई सूक्त संहिता–ग्रंथो में प्राप्त होते हैं, जिनम वायु को शुद्ध तथा अशुद्ध दो भागों में बाँटा गया है– 1. श्वसन योग्य शुद्ध वायु 2. जीवमात्र के लिए हानिकारक प्रदूषित वायु।

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः।।[8]

शुद्ध वायु सर्वव्यापक रूप से अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा समान उपयोगी है। आनन्दायक है। वह उसे प्राप्त कराता है, और हमारी आयु को बढाता है। यथा–

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।
प्रण आयूँपि तारिषत्।[9]

इस प्रकार वायु में विद्यमान अमृत की निधि ही ऑक्सीजन अथवा प्राण–वायु है जो हमें प्राण प्रदान करती है तथा शारीरिक मलों को विनष्ट कर मनुष्यों को चिरञ्जीवी बनाती है। प्रदूषण के समस्त ज्ञात–अज्ञात प्रकारों में वायु–प्रदुषण सबसे अधिक प्रभावकारी है क्योंकि वायु श्वास के माध्यम से प्रतिक्षण हमारे शरीर में प्रवश करती है। यज्ञ में डाली गई अहूतियाँ जिनमें केशर, कस्तुरी आदि सुगन्धित, घृत, दुग्ध आदि पुष्ट, गुड, शर्करा आदि निष्ट वृद्धि, बल तथा धैर्यवर्धक और रोग नाशक पदार्थ है। ये अग्नि के माध्यम से सूक्ष्माति सूक्ष्म होकर धूम्र के समस्त वातावरण में फैलकर वायु के साथ–साथ अन्य कारकों पर भी अपना प्रभाव डालते हैं। जिससे वायु प्रदूषक तत्वों का विनाश होने लगता है। इसीलिए वेद 'शन्नः वातः पवताम[10] कहता है तथा इस वायुमण्डल की पवित्रता के लिए 'शमु सन्तु यज्ञाः' कहता है।

जल प्रदूषण

जल प्रकृति का दिया हुआ सर्वाधिक मूल्यवान उपहार है, जिसके बिना जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। मानव सभ्यता का विकास जल की पर्याप्त आपूर्ति पर निर्भर करता है। जल के अभाव में मानव सभ्यता का अस्तित्व संभव नहीं है। आदिकाल से ही मानव द्वारा जल को प्रदूषित किया जाता रहा है, किन्तु वर्तमान समय में तीव्र जनसंख्या वृद्धि व औद्योगिकरण के कारण विद्यमान जल को प्रदूषित करने की गति और तीव्र हो गई है, मानव के विभिन्न क्रियाकलापों के कारण जब जल के रासायनिक भौतिक और जैविक गुणों में ह्रास होता है, तो इस प्रकार केजल को प्रदूषित जल कहा जाता है। अतः स्पष्ट है कि जब जल की भौतिक, रासायनिक अथवा जैविक संरचना में इस प्रकार का परिवर्तन होगा तो वह जल किसी प्राणी की जीवित दशाओं के लिए हानिकारक एवं अवांछित हो जायेगा। तभी वह सर्वाधिक प्रदूषित कहलाता है। जल प्रदूषण तीन प्रकार का होता है–

1. भौतिक जल प्रदूषण
2. रासायनिक जल प्रदूषण
3. जैविक जल प्रदूषण

जल प्रदूषण का प्रभाव अत्यधिक व्यापक और हानिकारक होता है क्योकि प्रत्येक जीवित मानव, पशु, पक्षी एवं जीव–जन्तु ही नहीं अपितु वनस्पति एवं कृषि का अस्तित्व भी इसी पर निर्भर करता है जैसे ही जल प्रदूषित होता है इसका दूषित परिणाम सभी को भुगतना पड़ता है। जल भोजन चक्र को नियन्त्रित करता है, दूषित जल से अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैलती है, जैसे–हैजा, टाईफाइड, डायरिया आदि। जल की कुल मात्रा 14 अरब मे ंसे पृथ्वी पर उपलब्ध 25 प्रतिशत ही जल स्वच्छ है।[11] धार्मिक आस्था का प्रतीक यमुना नदी का वजूद खतरे में है। बढते प्रदूषण के चलते यमुना का पानी जहरीला हो गया है, नदी में घुले तरह–तरह के रसायन अनेक बीमारियाँ फैला रहे है नदी के पानी को जाँचने के पश्चात निष्कर्ष सामने आया कि कैंसर जैसी बीमारियाँ पनप रही

है। देश की राजधानी दिल्ली के उद्योग धन्धे व घरों से निकलने वाला कचरा इसकों प्रदूषित करने में चार चाँद लगा रहे है। जल प्रदूषण को सर्वथा रोकने के लिए ऋषियों ने प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में भी सदाचार परक शिक्षा–निर्देश किया है–नाप्सु मूत्रपुरीषं कुर्यात्।[12] अर्थात् जल में मल–मूत्रत्याग नहीं करना चाहिए। मानुषि–सृष्टि के आदि पुरूष भगवान मनु भी इसी शिक्षा का उपदेश करते है–

नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा ष्ठीवनं वा समुत्सृजेत्।
अमेध्यलिप्तमन्ल्यद्वा लोहितं वा विवाणि वा।।[13]

अर्थात् पानी में मलमूत्र त्याग नहीं करे। थूके नहीं अर्थात् कुल्ला करते समय लार–खकार आदि जल–स्त्रोत नदी–सरोवर आदि मे नहीं गिराव और अन्य दूषित पदार्थ, रक्त, मांस या विष आदि न डाले। शुद्ध पेयजल की उपलब्धता पर ही मानव का आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास निर्भर करता है। अशुद्ध जल के कारण मानव अनेक रोगों से ग्रसित होकर जीवन–यापन कर रहा है। जल की अशुद्धियों के कारण मानव–संस्कृति का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए जल प्रदूषण पर नियन्त्रण अति आवश्यक है।[14]

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि में आरोह–अवरोह होता है, इसकी एक निश्चित सीमा होती है जो मानव के लिए आवश्यक है किन्तु इस सीमा के अतिक्रमण होने पर यह मानव के लिए अत्यन्त कष्टदायी एवं हानिकारक हो जाती है। साथ ही साथ मानव स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, ध्वनि पर पूर्ण नियन्त्रण करना अत्यन्त कठिन है किन्तु ध्वनि–प्रदूषण के मूल स्त्रोत पर नियन्त्रण करना अत्यन्त आवश्यक है। बहुध्वनि हॉर्न बजाने वालों पर कारखानों आदि में साइलैन्सर जैसे प्रतिराध लगाकर ध्वनि प्रदुषण को कम किया जा सकता है। आज अनेक विश्व संगठन, क्षेत्रीय संगठन एवं संगठन एवं राष्ट्रीय सरकार इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है क्योंकि इस समस्या का सम्बन्ध सम्पूर्ण मानव जाति एवं जीव जगत से है इसके लिए संगठित होकर उपाय करना अति आवश्यक है।[15] ध्वनि मानव–जीवन के पारस्परिक व्यवहार की संवाहिका है, इसके अभाव में मानव एक–दूसरे से बहुत दूर हो जाता है। मानव के सदृश अन्य जीव–जन्तु भी ध्वनि के माध्यम से पारस्परिक वेगो–संवेगों, आन्तरिक भावों की प्रस्तुति करते है। यह ध्वनि शब्दरूप है जो ज्ञान व विद्या की सेत है। वेदों में ध्वनि के महत्व को बताते हुए कहा है–

अन्तररे में नभसी घोषो अस्तु पृथक ते ध्वनयों यन्तु शीभम्।
अभिक्रन्द स्तनयोत्पिा नः श्लोककृन्मित्रततूर्याय स्वर्धी।।[16]

प्राकृतिक, जैविक, कृत्रिम कलकारखाने, घरेलू मनोरंजन, सामाजिक तथा धार्मिक कार्य, राजनैतिक गतिविधियों आदि के कारण प्रदूषण होता है किन्तु मनुष्य चाहे तो प्रदूषण पर बहुत हद तक नियन्त्रण पाया जा सकता है। जैसे गंदगी पर नियन्त्रण, बढ़ती हुई आबादी पर रोक, पेड़–पौधों का अधिकाधिक रोपण, वनों की दिशा परिवर्तित करना ताकि पर्यावरण को दूषित होन से बचाया जा सके तथा वन्य जीव जन्तुओं एवं पेड़ पौधों का अस्तित्व कायम रह सके। अन्त में–

गुजरों जो बाग से तो दुओ माँगते चलो,
जिसमें खिले हैं फूल वो डाली हरी रहे।

अध्ययन का उद्देश्य

आज जीवन को सुखमय बनाने के लिए पर्यावरणीय संचेतना की महती आवश्यकता हे। वैदिक साहित्य में हजारों वर्षों पूर्व लिखे गये सिद्धान्त आज भी अकाट्य व जीव–जगत के लिए कल्याणकारी हे। वैदिक साहित्य में प्रकृति के साथ भावपूर्ण तादात्म्य सम्बन्धों के जो प्रतिमान स्थापित किये उनका उद्देश्य पर्यावरण को बचाना है। आज आवश्यकता है वैदिक साहित्य के पृष्ठों को बार–बार फिर से पलटने की जिससे भारतीय धर्म, संस्कृति एवं साहित्य और परम्पराओं में निहित प्रकृति–मानव के मध्य आस्थवान सम्बन्धों की भावना पुनः स्थापित कर विश्व एवं स्थानीय स्तर पर पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके, आज पूरे विश्व में ग्लोबल वार्मिंग के बढ़ते प्रभाव से आमजन परेशान है।

निष्कर्ष

वैज्ञानिकों का मानना है कि आधुनिक मानव द्वारा अपने विलासितापूर्ण जीवन के लिए पृथ्वी का जिस प्रकार अत्यधिक दोहन किया जा रहा ह। उससे वायुमण्डल में कार्बन–डाई–ऑक्साइड़, मिथेन, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, अत्यधिक नाइट्रस ऑक्साइड, हेलोन आदि गैसों के द्वारा भूमण्डलीय तापमान में वृद्धि हो रही है। ओजोन परमत में छेद होना भी ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण माना जाता है। ज्वालामुखी, भूकम्प, वायुमण्डली तूफान, हिमपात, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, प्राकृतिक विद्युत विसर्जन, भूमिस्वखलन, वनों में अग्नि का प्रकोप आदि ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न पर्यावरण प्रदूषण के ही परिणाम हैं इसलिए पर्यावरण संरक्षण की चुनौतियों का बोध जन–जन को अवश्य कराएँ, जागरूक बनाएँ, जनचेतना फैलाएँ।

प्रभो !यज्ञमय सार्थक जीवन भारत का जन–जन पाएँ।
शान्ति व्यक्ति में, शान्ति राष्ट्र में, शान्ति विश्व में आएँ।

अंत टिप्पणी

1. *यादव, वीरेन्द्र सिंह, भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चिन्तन के विभिन्न आयाम, प्रथम सं.–2010, पृ. सं.–*
2. *शर्मा, आशीष नारायण, अन्तर्राष्ट्रिय शोध पत्रिका, जुलाई–सितम्बर 2016, पृ.सं. 198*
3. *भारतीय संस्कृति की देन–पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्यिक निबन्ध संग्रह, कानपुर पब्लिशिंग होम, पृ. सं.– 24–30*
4. *पर्यावरण की संस्कृति, शुभू पटवा, पृ.स. 19*
5. *भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चिन्तन के विविध आयाम, डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, पृ. स. 265*
6. *पर्यावरण भूगोल, सविन्द्र सिंह, 1991, पृ.सं. 461*
7. *पर्यावरण भूगोल, सविन्द्र सिंह, 1991, पृ. स. 476*
8. *ऋग्वेद, 10.137.2*
9. *ऋग्वेद 10.186.1*
10. *यजुर्वेद 36.10*

11. *नवीन शोध संसार, अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका, आशीष नारायण शर्मा जुलाई–सितम्बर, 2016 पृ. स.– 199*
12. *तैत्तिरीयअरण्यकम् 1.26.7*
13. *मनुस्मृति, 4.56*
14. *देश के इस दौर में संस्कृत, संस्कृति और सांस्कृतिक अस्मिता की चुनौतियाँ–डॉ हुकुम सिंह, संस्करण– 2014, पृ. स.–232*
15. *नवीन शोध संसार, अर्न्तराष्ट्रीय पत्रिका, जुलाई–सितम्बर 2016, पृ.स. 199*
16. *अर्थर्ववेद 5.20.7*